Asthal Bohar, Rohtak-124021
NH-10, NCR, Haryana (India)

06 January, 2023
Friday
Page No.1

BMU IN NEWS

BABA MASTNATH UNIVERSITY

हरिभूमि
समाचार ही नहीं, विचार भी

शोध क्षेत्र में रूपरेखा महत्वपूर्णः प्रो. यादव

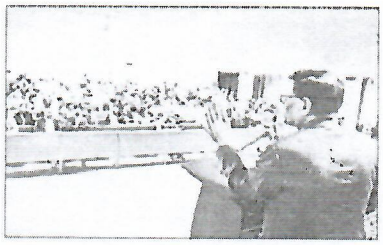

रोहतक। आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरएस यादव।

हरिभूमि न्यूज ▸▸ रोहतक

शोध कार्य में रूपरेखा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। रूपरेखा शोध को आधार देने का कार्य करती है। अगर हम शोध का सही विषय चयन करके रूपरेखा बनाते हैं तो निकट भविष्य में शोध संबंधी समस्याओं का निराकरण आसानी से करा सकते हैं। यह बात पीएचडी कोर्स वर्क की परीक्षा पास कर चुके शोधार्थियों को बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरएस यादव ने कही। उन्होंने कहा कि शोध हमारे ज्ञान के विस्तार में सहायता करता है। मानव समाज की समस्याओं के हल का रास्ता ही शोध है। शोध से तार्किक और समीक्षात्मक अनुशीलन की दृष्टि मिलती है। शोध के बिना ज्ञान और विकास में वृद्धि संभव नहीं। यदि शिक्षा और शोध के क्षेत्र में श्रेष्ठ बनना है तो हमें अपने शोध की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना होगा।

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय की प्रति कुलाधिपति डॉ. अंजना राव ने बताया कि शिक्षा और शोध के क्षेत्र में अगर हमें श्रेष्ठ बनना है तो शोध की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना होगा क्योंकि शोध मनुष्य के ज्ञान को नई दिशा करता है जिससे उसका बौद्धिक विकास होता है।अधिष्ठाता शैक्षणिक प्रो. नवीन कुमार ने कहा कि शोध अनवरत रूप से चलने वाली प्रक्रिया है, इसमें शोधार्थी पूर्व ज्ञान को आधार मानकर कार्य क्षेत्र का चयन करके आगे बढ़ता है और जो नए परिवर्तन के साथ समाज के लिए उपयोगी साबित बने, वह शोधकार्य की श्रेणी में गिना जाता है।

इस मौके पर कुलसचिव डॉ. मनोज कुमार वर्मा, परीक्षा नियंत्रक डॉ. मुकेश सिंगला, छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ. रवि राणा, चिकित्सा प्रभारी डॉ. ललित कुमार, प्रो. बीएम यादव, डॉ. सुभाष चन्द्र गुप्ता, डॉ. नवदीप बिसला, डॉ. अरूणाचल, डॉ. अनिल कनवा, डॉ. विनय जग्गा आदि मौजूद रहे।

दैनिक जागरण

शोध में रूपरेखा की महत्वपूर्ण भूमिका : प्रो. यादव

जागरण संवाददाता, रोहतक : बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरएस यादव ने पीएचडी. कोर्स वर्क की परीक्षा पास कर चुके शोधार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि शोध कार्य में रूपरेखा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। रूपरेखा शोध को आधार देने का कार्य करती है। अगर हम शोध का सही विषय चयन करके रूपरेखा बनाते हैं तो निकट भविष्य में शोध संबंधी समस्याओं का निराकरण आसानी से करा सकते हैं।

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय पीएचडी कोर्स वर्क की परीक्षा पास कर चुके शोधार्थियों को संबोधित करते कुलपति प्रो.आरएस यादव। ● जागरण

उन्होंने अनुसंधान के विषय में जानकारी देते हुए कहा कि शोध हमारे ज्ञान के विस्तार में सहायता करता है। मानव समाज की समस्याओं के हल का रास्ता ही शोध है। शोध से तार्किक और समीक्षात्मक अनुशीलन की दृष्टि मिलती है। शोध के बिना ज्ञान और विकास में वृद्धि संभव नहीं। यदि शिक्षा और शोध के क्षेत्र में श्रेष्ठ बनना है तो हमें अपने शोध की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना होगा। वर्तमान युग तकनीकी का युग है। शोध की कसौटी परखने के लिए अब से पहले न तो कोई साफ्टवेयर था और न ही इतनी ज्यादा छानबीन की जाती थी। लेकिन अब कोई शोधार्थी अपने शोध कार्य को नकल की सहायता से पूर्ण करता है तो साहित्य चोरी सॉफ्टवेयर के माध्यम से वह तुरंत पकड़ में आ जाता है। अतः इस बात पर शोधार्थी विशेष ध्यान दें।

अधिष्ठाता शैक्षणिक, प्रो. नवीन कुमार ने कहा कि शोध अनवरत रूप से चलने वाली प्रक्रिया है इसमें शोधार्थी पूर्व ज्ञान को आधार मानकर कार्य क्षेत्र का चयन करके आगे बढ़ता है और जो नए परिवर्तन के साथ समाज के लिए उपयोगी साबित बने, वह शोधकार्य की श्रेणी में गिना जाता है।

इस मौके पर कुलसचिव डा. मनोज कुमार वर्मा, परीक्षा नियंत्रक डा. मुकेश सिंगला, छात्र कल्याण अधिष्ठाता डा. रवि राणा, चिकित्सा प्रभारी डा. ललित कुमार, प्रो. बीएम यादव, डा. सुभाष चन्द्र गुप्ता, डा. नवदीप बिसला, डा. अरूणाचल, डा. अनिल कनवा, डा. विनय जग्गा, डा. सोनिया सरोहा, डा. पल्लवी भारद्वाज, डा. पवन जलवाल, डा. राजीव अरोड़ा, डा. जसप्रीत दहिया, डा. अनिल डूडी मौजूद थे।

अमर उजाला

'शोध के क्षेत्र में रूपरेखा की महत्वपूर्ण भूमिका'

मस्तनाथ विश्वविद्यालय में शोधार्थियों के लिए व्याख्यान आयोजित

संवाद न्यूज एजेंसी

रोहतक। शोध कार्य में रूपरेखा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। रूपरेखा शोध को आधार देने का कार्य करती है। अगर हम शोध का सही विषय चयन करके रूपरेखा बनाते हैं तो निकट भविष्य में शोध संबंधी समस्याओं का निराकरण आसानी से कर सकते हैं। यह बात बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरएस यादव ने कही।

व्याख्यान में संबोधित करते कुलपति प्रो. आरएस यादव। विज्ञप्ति

वे बीरवार को पीएचडी कोर्स वर्क की परीक्षा पास कर चुके शोधार्थियों के लिये आयोजित व्याख्यान में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि शोध हमारे ज्ञान के विस्तार में सहायता करता है। बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय की प्रति कुलाधिपति डॉ. अंजना राव ने बताया कि शिक्षा और शोध के क्षेत्र में अगर हमें श्रेष्ठ बनना है तो शोध की गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करना होगा। क्योंकि शोध मनुष्य के ज्ञान को नई दिशा प्रदान करता है जिससे उसका बौद्धिक विकास होता है। अधिष्ठाता शैक्षणिक प्रो. नवीन कुमार ने कहा कि शोध अनवरत रूप से चलने वाली प्रक्रिया है, इसमें शोधार्थी पूर्व ज्ञान को आधार मानकर कार्य क्षेत्र का चयन करके आगे बढ़ता है और जो नए परिवर्तन के साथ समाज के लिए उपयोगी साबित बने, वह शोधकार्य की श्रेणी में गिना जाता है। इस मौके पर कुलसचिव डॉ. मनोज कुमार वर्मा, परीक्षा नियंत्रक डॉ. मुकेश सिंगला, छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ. रवि राणा, चिकित्सा प्रभारी डॉ. ललित कुमार, प्रो. बीएम यादव, डॉ. सुभाष चंद्र

दैनिक भास्कर

शोध के क्षेत्र में रूपरेखा की महत्वपूर्ण भूमिका: प्रो. आरएस

बीएमयू के कुलपति ने शोधार्थियों से किया संवाद

भास्कर न्यूज, रोहतक

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरएस यादव ने गुरुवार को पीएचडी कोर्स वर्क की परीक्षा पास कर चुके शोधार्थियों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि शोध कार्य में रूपरेखा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। रूपरेखा शोध को आधार देने का कार्य करती है। अगर हम शोध का सही विषय चुन कर रूपरेखा बनाते हैं तो निकट भविष्य में शोध संबंधी समस्याओं का निराकरण आसानी से करा सकते हैं। अनुसंधान के विषय में कहा कि शोध हमारे ज्ञान के विस्तार में सहायता करता है। मानव समाज की समस्याओं के हल का रास्ता ही शोध है। शोध से तार्किक और समीक्षात्मक अनुशीलन की दृष्टि मिलती है। शोध के बिना ज्ञान और विकास में वृद्धि संभव नहीं। उन्होंने कहा कि वर्तमान युग तकनीकी का युग है। शोध की कसौटी परखने के लिए अब से पहले न तो कोई सॉफ्टवेयर था और न ही इतनी ज्यादा छानबीन की जाती थी। लेकिन अब कोई शोधार्थी अपने शोध कार्य को नकल की सहायता से पूर्ण करता है तो साहित्य चोरी सॉफ्टवेयर के माध्यम से वह तुरंत पकड़ में आ जाता है। इस मौके पर प्रो. नवीन कुमार, डॉ. मनोज कुमार वर्मा, डॉ. मुकेश सिंगला, डॉ. रवि राणा, डॉ. ललित कुमार, प्रो. बीएम यादव, डॉ.सुभाष चन्द्र गुप्ता, डॉ. नवदीप बिसला, डॉ. अरुणाचल, डॉ. अनिल कनवा, डॉ. विनय जग्गा, डॉ. सोनिया सरोहा, डॉ. पल्लवी भारद्वाज, डॉ. पवन

Sukrampal

पल-पल न्यूज

शोध के क्षेत्र में रूपरेखा की महत्वपूर्ण भूमिका : प्रो. आर एस यादव

रोहतक, सुकरमपाल 5 जनवरी बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर. एस. यादव ने पीएच.डी. कोर्स वर्क की परीक्षा पास कर चुके शोधार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि शोध कार्य में रूपरेखा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। रूपरेखा शोध को आधार देने का कार्य करती है। अगर हम शोध का सही विषय चयन करके रूपरेखा बनाते है तो निकट भविष्य में शोध संबंधी समस्याओं का निराकरण आसानी से करा सकते है।

उन्होंने यह भी बताया कि अनुसंधान के विषय में जानकारी देते हुए कहा कि शोध हमारे ज्ञान के विस्तार में सहायता करता है। मानव समाज की समस्याओं के हल का रास्ता ही शोध है। शोध से तार्किक और समीक्षात्मक अनुशीलन की दृष्टि मिलती है। शोध के बिना ज्ञान और विकास में वृद्धि संभव नहीं। यदि शिक्षा और शोध के क्षेत्र में श्रेष्ठ बनना है तो हमें अपने शोध की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना होगा। वर्तमान युग तकनीकी का युग है। शोध की कसौटी परखने के लिए अब से पहले न तो कोई सॉफ्टवेयर था और न ही इतनी ज्यादा छानबीन की जाती थी लेकिन अब कोई शोधार्थी अपने शोध कार्य को नकल की सहायता से पूर्ण करता है तो साहित्य चोरी सॉफ्टवेयर के माध्यम से वह तुरंत पकड़ में आ जाता है। अतः इस बात पर शोधार्थी विशेष ध्यान दें। बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय की प्रति कुलाधिपति डॉ. अंजना राव ने बताया कि शिक्षा और शोध के क्षेत्र में अगर हमें श्रेष्ठ बनना है तो शोध की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना होगा क्योंकि शोध मनुष्य के ज्ञान को नई दिशा करता है जिससे उसका बौद्धिक विकास होता है। इसी संदर्भ में अधिष्ठाता शैक्षणिक, प्रो० नवीन कुमार ने कहा कि शोध अनवरत रूप से चलने वाली प्रक्रिया है इसमें शोधार्थी पूर्व ज्ञान को आधार मानकर कार्य क्षेत्र का चयन करके आगे बढ़ता है और जो नए परिवर्तन के साथ समाज के लिए उपयोगी साबित बने, वह शोधकार्य की श्रेणी में गिना जाता है। इस मौके पर कुलसचिव डॉ. मनोज कुमार वर्मा, परीक्षा नियंत्रक डॉ. मुकेश सिंगला, छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ.रवि राणा, चिकित्सा प्रभारी डॉ. ललित कुमार, प्रो. बी एम यादव, डॉ.सुभाष चन्द्र गुप्ता, डॉ. नवदीप बिसला, डॉ. अरुणाचल, डॉ. अनिल कनवा, डॉ. विनय जग्गा, डॉ. सोनिया सरोहा, डॉ. पल्लवी भारद्वाज, डॉ.पवन जलवाल, डॉ.राजीव अरोड़ा, डॉ.जसप्रीत दहिया, डॉ.अनिल डूडी सहित संबंधित विभागों के समस्त शिक्षकगण और शोधार्थी उपस्थित रहे।

शोध के क्षेत्र में रूपरेखा की महत्वपूर्ण भूमिका: प्रो. यादव

पल पल न्यूज: रोहतक, 5 जनवरी (दर्शन अरोड़ा)। बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरएस यादव ने पीएच.डी कोर्स वर्क की परीक्षा पास कर चुके शोधार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि शोध कार्य में रूपरेखा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। रूपरेखा शोध को आधार देने का कार्य करती है। अगर हम शोध का सही विषय चयन करके रूपरेखा बनाते है तो निकट भविष्य में शोध संबंधी समस्याओं का निराकरण आसानी से करा सकते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि कि शोध हमारे ज्ञान के विस्तार मे महायता करता है। मानव समाज की समस्याओं के हल का रास्ता ही शोध है। शोध से तार्किक और समीक्षात्मक अनुशीलन की दृष्टि मिलती है। शोध के बिना ज्ञान और विकास मे वृद्धि संभव नहीं। यदि शिक्षा व शोध के क्षेत्र मे अगर हमें श्रेष्ठ बनना है तो हमें अपने शोध की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना होगा। वर्तमान युग तकनीक का युग है। शोध की कसौटी परखने के लिए अब से पहले न तो कोई सॉफ्टवेयर था और न ही इतनी ज्यादा छानबीन की जाती थी लेकिन अब कोई शोधार्थी अपने शोध कार्य को नकल की सहायता से पूर्ण करता है तो साहित्य चोरी सॉफ्टवेयर के माध्यम से वह तुरंत पकड़ में आ जाता है। अतः इस बात पर शोधार्थी विशेष ध्यान दें। बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय की प्रति कुलाधिपति डॉ. अंजना राव ने बताया कि शिक्षा व शोध के क्षेत्र मे अगर हमें श्रेष्ठ बनना है तो शोध की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना होगा क्योंकि शोध मनुष्य के ज्ञान को नई दिशा करता है जिससे उसका बौद्धिक विकास होता है। इसी संदर्भ में अधिष्ठाता शैक्षणिक, प्रो० नवीन कुमार ने कहा कि शोध अनवरत रूप से चलने वाली प्रक्रिया है इसमें शोधार्थी पूर्व ज्ञान को आधार मानकर कार्यक्षेत्र का चयन करके आगे बढ़ता है। जो नए परिवर्तन के साथ समाज के लिए उपयोगी साबित हो, वह शोधकार्य की श्रेणी में गिना जाता है।

दैनिक उजाला आज तक
राष्ट्रीय हिन्दी समाचार पत्र

शोध के क्षेत्र में रूपरेखा की महत्वपूर्ण भूमिका : प्रो. आर एस यादव

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर. एस. यादव ने पीएच.डी. कोर्स वर्क की परीक्षा पास कर चुके शोधार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि शोध कार्य में रूपरेखा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। रूपरेखा शोध को आधार देने का कार्य करती है। अगर हम शोध का सही विषय चयन करके रूपरेखा बनाते हैं तो निकट भविष्य में शोध संबंधी समस्याओं का निराकरण आसानी से करा सकते हैं।

उन्होंने यह भी बताया कि अनुसंधान के विषय में जानकारी देते हुए कहा कि शोध हमारे ज्ञान के विस्तार में सहायता करता है। मानव समाज की समस्याओं के हल का रास्ता ही शोध है। शोध से तार्किक और समीक्षात्मक अनुशीलन की दृष्टि मिलती है। शोध के बिना ज्ञान और विकास में वृद्धि संभव नहीं। यदि शिक्षा और शोध के क्षेत्र में श्रेष्ठ बनना है तो हमें अपने शोध की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना होगा।

वर्तमान युग तकनीकी का युग है। शोध की कसौटी परखने के लिए अब से पहले न तो कोई सॉफ्टवेयर था और न ही इतनी ज्यादा छानबीन की जाती थी।लेकिन अब कोई शोधार्थी अपने शोध कार्य को नकल की सहायता से पूर्ण करता है तो साहित्य चोरी सॉफ्टवेयर के माध्यम से वह तुरंत पकड़ में आ जाता है। अतः इस बात पर शोधार्थी विशेष ध्यान दें।

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय की प्रति कुलाधिपति डॉ. अंजना राव ने बताया कि शिक्षा और शोध के क्षेत्र में अगर हमें श्रेष्ठ बनना है तो शोध की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना होगा क्योंकि शोध मनुष्य के ज्ञान को नई दिशा करता है जिससे उसका बौद्धिक विकास होता है।

इसी संदर्भ में अधिष्ठाता शैक्षणिक, प्रो० नवीन कुमार ने कहा कि शोध अनवरत रूप से चलने वाली प्रक्रिया है इसमें शोधार्थी पूर्व ज्ञान को आधार मानकर कार्यक्षेत्र का चयन करके आगे बढ़ता है और जो नए परिवर्तन के साथ समाज के लिए उपयोगी साबित बने, वह शोधकार्य की श्रेणी में गिना जाता है।

इस मौके पर कुलसचिव डॉ. मनोज कुमार वर्मा, परीक्षा नियंत्रक डॉ. मुकेश सिंगला, छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ.रवि राणा, चिकित्सा प्रभारी डॉ. ललित कुमार, प्रो. बी एम यादव, डॉ.सुभाष चन्द्र गुप्ता, डॉ. नवदीप बिसला, डॉ. अरुणाचल, डॉ. अनिल कनवा, डॉ. विनय जग्गा, डॉ. सोनिया सरोहा, डॉ. पल्लवी भारद्वाज, डॉ.पवन जलवाल, डॉ.राजीव अरोड़ा, डॉ.जसप्रीत दहिया, डॉ.अनिल डूडी सहित संबंधित विभागों के समस्त शिक्षकगण और शोधार्थी उपस्थित रहे।